Roll No. .....

(07/22-II)

13186

M. A. EXAMINATION

(For Batch 2017 to 2020 Only)

(Second Semester)

HINDI

Elective-II

सूरदास : एक विशेष अध्ययन

Time : Three Hours *Maximum Marks : 70*

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. निम्नलिखित **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×5=10

(क) 'भ्रमरगीत' में प्रेम या योग में से किसको बड़ा माना है ?

(ख) सूरदास की भक्ति सगुण है या निर्गुण ?

(ग) सूरदास की भक्ति-भावना की **दो** विशेषताएँ लिखिए ।

(घ) सूरदास के कृष्ण के व्यक्तित्त्व की दो विशेषताएँ लिखिए ।

(ङ) सूरदास की रचनाओं के नाम लिखिए ।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×15=45

(क) 'भ्रमर गीत' परम्परा में सूरकृत भ्रमरगीत का स्थान निर्धारित कीजिए ।

(ख) सूरदास के वात्सल्य का सोदाहरण वर्णन करते हुए सिद्ध कीजिए कि सूर वात्सल्य शिरोमणि हैं ।

(ग) सूर की दार्शनिक चेतना पर प्रकाश डालिए ।

(घ) सूरदास की भक्ति का स्वरूप बताते हुए उनकी विनय भावना पर सारगर्भित विवेचना प्रस्तुत कीजिए ।

(ङ) सूर के काव्य में ब्रज संस्कृति का ऐसा सुन्दर प्रस्तुतिकरण हुआ है कि उसका लोक तत्त्व पूर्णतः उभरकर आ गया है । स्पष्ट कीजिए ।

(च) 'सूर की गोपियाँ भोली भाली ग्रामीण बालिकाएँ नहीं' इस आलोक में उन द्वारा दिये गए तर्कों से सगुणोपासना को स्पष्ट कीजिए ।

3. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की प्रसंग व्याख्या कीजिए : $3 \times 5 = 15$

(क) 'बड़ी है राम नाम की ओट ।
सरन गये प्रभु काढ़ि देत नहीं करत कृपा कै कोट।
बैठत सबै सभा हरि जू की कौन बड़ौ को छोट ?
सूरदास पारस कै परसैं मिटति लोह की खोट ।।'

(ख) 'हरि किलकत जसुमति की कनियाँ ।
मुख मैं तीनि लोक दिखराए, चकित भई नंद-रनियाँ।
घर-घर हाथ दिखावति डोलति, बाँधति गरैं बधनियाँ।
सूरस्याम की अद्‌भूत लीला नहिं जानत मुनिजनियाँ ।।'

(ग) कोकिल हरि कौ बोल सुनाउ ।
मधुबन तै उपटारि स्याम को इहि ब्रज कौ ले आउ ।।
जा उस कारन देत सयाने, तन मन धन तब साज ।।
सुजस बिकात बचन कै बदले क्यों बिसाहुत आज ।।
कीजै कछु उपकार परायौ, इहै सयानौ काज ।
सूरदास पुनि कहै यह अवसर, बिनु बंसत रितुराज ।।

(घ) अब या तनहि राखि कह कीजै ।
सुनि री सखा स्याम सुंदर बिनु, बांटि विषम विष पीजै ।।
कै गिरिए गिरि चढ़ि सुनि सजनी सीस संकरहि दीजै ।।

कै दहिंए दारून दावानल, जाइ जमुन धैंसि लीजै ।।
दुसह बियोग बिरह माधौ के, कोहि नहीं दिन
छीजै ।।

(ङ) राधा तैं हरि कै रंग राँची ।
तो तैं चतुर ओर नहिं कोउ, बात कहौ मैं सांची ।।
तैं उनकौ मन नहीं चुरायौ, ऐसी है तू काँची ।।
हरि तेरौ मन अबहि चुरायौ, प्रथम तुँहि हैं नाँची ।।
तुम अरू स्याम एक हो दोउ, बाकी नाही बाँची ।।
सूर स्याम तेरैं बस, राधा, कहति लीक में खाँची ।।

(च) देवनि दिवि दुदुभी बजाई, सुनि मथुरा प्रगटे
जादवपति ।
विद्याधर-किन्नर कलोल मन उपजावत मिलि कंठ
अमितगति ।।
गावत गुन गंधर्व पुलकि तन, नाचतिं सब सुर
नारि रसिक अति ।
बरषत सुमन सुदेस सूर, जय जयकार के
सिब बिरंचि इन्द्रादि अमर मुनि, फूले सुख न समात ।